प्राक्कथन

एम.ए. (हिंदी) में 'सागर लहरें और मनुष्य' के अध्ययन के बाद आँचलिक उपन्यास साहित्य के अध्ययन के संबंध में मेरे मन में बडी रूचि निर्माण हुई। डॉ. रामदरश मिश्र के आँचलिक उपन्यासों ने मुझे बडा ही प्रभावित किया। प्रतीत हुआ कि इनके उपन्यासों पर न्यून मात्रा में लिखा गया है। संशोधन के क्षेत्र में भी केवल कुछ लघु-शोध-प्रबंध पाये गये। १) रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आँचलिकता का मूल्यांकन २) रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामचेतना।इसके आलावा कुछ फुटकर लेख पाए गये।

फिर भी उनकी किसी एक रचना पर समग्र रूप से अनुशीलन नहीं मिला। इससे ही उनके प्रथम आँचलिक उपन्यास 'पानी के प्राचीर' का समग्र अनुशीलन करने की तीव्र इच्छा मेरे मन में हुई। अत: इस लघु-शोध- प्रबंध के लिए मैंने वही उपन्यास चुना।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के अनुसंधान के समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न निर्माण हुए -

1) प्रस्तुत उपन्यास में आँचलिकता का निर्वाह कहाँतक हुआ है ?

2) प्रस्तुत उपन्यास में अँचल की किन समस्याओं का उद्‌घाटन हुआ है ?

3) क्या लेखक निराशावादी हैं ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर मैंने उपसंहार में दिए हैं।

अध्ययन की सुविधा के लिए अध्याय विभाजन निम्न प्रकार से किया है।

प्रत्येक अध्याय के प्रारंभ में पाठकों की सुविधा के लिए संबंधित तत्व के संबंध में विवेचन किया है,जिससे उस अध्याय के अध्ययन की भूमिका तैयार हो।

प्रथम अध्याय है,-डॉ.रामदरश मिश्र -व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

प्रस्तुत अध्याय में डॉ.रामदरश मिश्र जी के बहुमुखी व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है और उनकी रचनाओं का संक्षेप में परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय है,'पानी के प्राचीर'की कथावस्तु-विश्लेषण सहित।' इसमें आलोच्य उपन्यास की संक्षिप्त कथा जहाँतक हो सके विस्तृत रूप में दी है,जिससे कथावस्तु का पूर्ण आकलन हो। अंत में

विषय और वस्तु -शिल्प की दृष्टि से विश्लेषण किया है।

तृतीय अध्याय है- 'पानी के प्राचीर' में पात्र-चरित्र चित्रण '

इसमें उपन्यास के विभिन्न पात्र और उनके चरित्र-चित्रण पर विवेचन किया है,तथा उनका विवेचन भी किया है।

चतुर्थ अध्याय है - 'पानी के प्राचीर ' में वातावरण-आँचलिकता के विशेष संदर्भ में।

इसमें आँचलिकता के संदर्भ में देश-काल-वातावरण का विस्तृत विवेचन किया है।

पंचम अध्याय है-'पानी के प्राचीर' में भाषा -कथोपकथन और शैली शिल्प -'

इसमें उपन्यास की भाषा-शैली पर साधार विवेचन किया है।

षष्ठ अध्याय है -'पानी के प्राचीर 'में ,प्रतिबिंबित समस्याएँ।

इस में उपन्यास में प्रतिबिंबित समस्याओं पर विवेचन किया है और लेखक के दृष्टिकोण को आँकने का प्रयास किया है।

उपसंहार : में उपन्यास के अनुशीलन के प्रांरभ में जो प्रश्न मेरे मन में उठे थे उनके उत्तर देने का प्रयास है और अनुसंधान की उपलब्धियों पर विचार करते हुए अनुसंधान की नई दिशाओं का भी संकेत देने का प्रयत्न किया हे।